पुस्तकालय का उपहार

कैथरीन विंडहैम, चित्र : फ्रैंक हार्डी

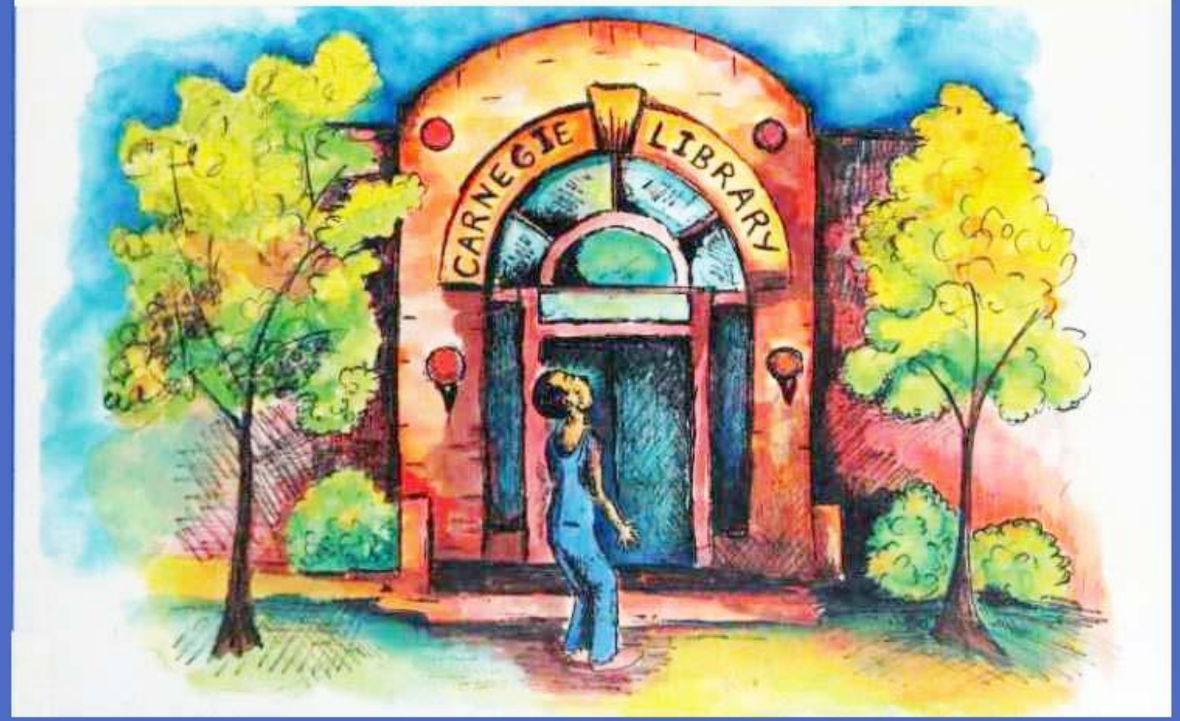

अलबामा की ऐतिहासिक सेल्मा पब्लिक लाइब्रेरी
के शताब्दी के अवसर पर, कथाकार कैथरीन,
अर्नेस्ट डॉसन की सच्ची कहानी बताती हैं.

जब वो 1930 के दशक में एक छोटे लड़के थे,
तब रंगभेद और अलगाव कानूनों के कारण डॉसन,
सेल्मा पुस्तकालय का उपयोग नहीं कर सके थे.
लेकिन किताबों के प्रति उनका प्रेम और सीखने की उनकी
उत्सुकता बेहद प्रबल थी, और अंत में वे एक शिक्षक बन गए.
वर्षों बाद, उन्होंने सेल्मा पब्लिक लाइब्रेरी को बच्चों की पुस्तकों
का उपहार दिया ताकि सभी नस्लों, जातियों के अन्य उत्सुक युवा
पाठक - हमेशा किताबों का जादू खोजने के लिए
सेल्मा पुस्तकालय में आते रहें.

पुस्तकालय का उपहार

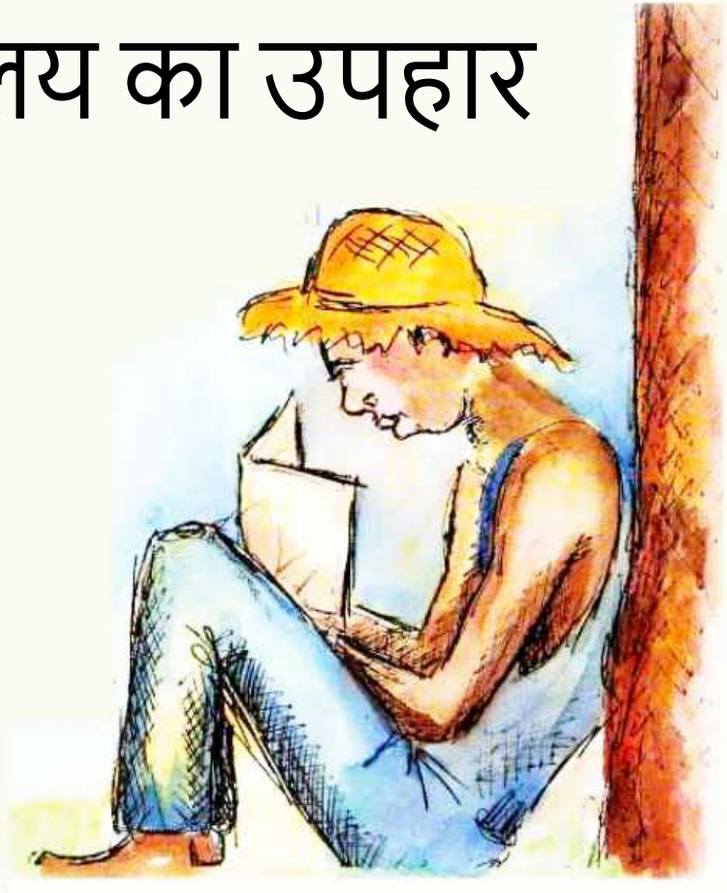

चलो, अर्नेस्ट! हम सेल्मा जा रहे हैं! नौ वर्षीय अर्नेस्ट डॉसन को, उसके लिए किसी आग्रह की ज़रुरत नहीं थी. वो शहर जाने को बेहद आतुर था. वो भागकर वैगन के पास गया और पीछे से उसमें कूद गया.

उसकी माँ, पर्ली-मे, अपने पति, जैक के बगल में स्प्रिंग सीट पर बैठी थीं. अर्नेस्ट अपने पापा के खच्चर की लगाम खींचने और चाबुक की आवाज़ सुनने का इंतजार कर रहा था. जब पापा ने जोर से "गिडी-अप!" कहा तो वो संकेत था कि खच्चर ने वैगन को यार्ड से बाहर खींच लिया था और अब वो धूल भरी सड़क पर सेल्मा की ओर बढ़ रहा था. यह सब शहर जाने की रस्म का एक हिस्सा था. अर्नेस्ट को रस्में पसंद थीं.

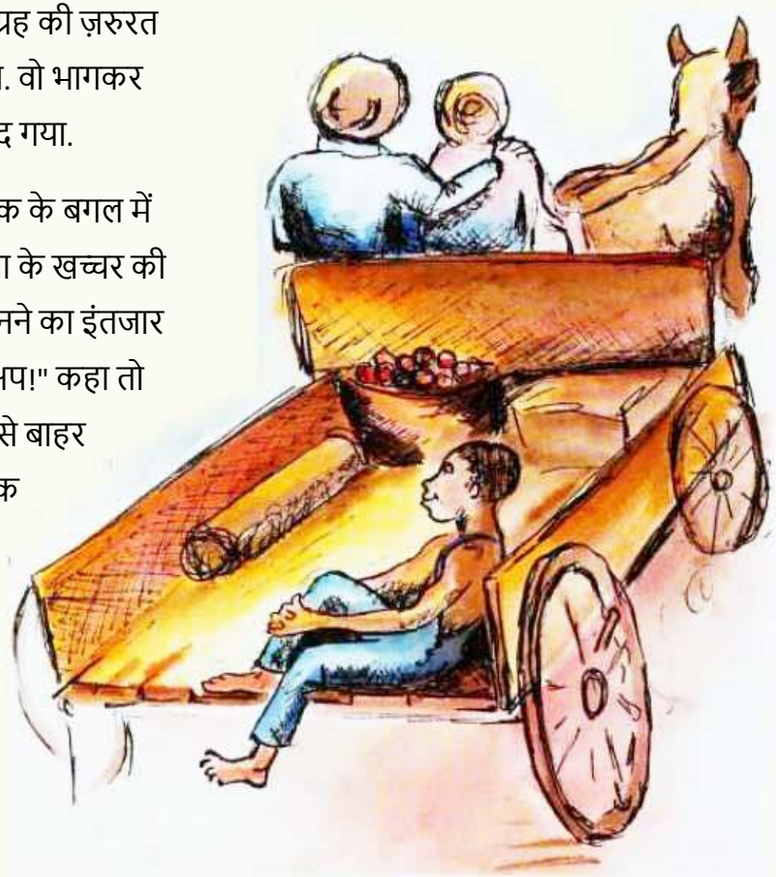

"सावधान रहना, अर्नेस्ट, गिरना मत. देखो, सड़क बड़ी उबड़-खाबड़ है," उसकी माँ ने चेतावनी दी. वो चेतावनी भी उस रस्म का हिस्सा ही थी.

जैसे ही उन्होंने गति पकड़ी, एक वैगन का पहिया ज़ोर से चरमराने लगा. "घर से निकलने से पहले मुझे उस पहिये में तेल डालना चाहिए था," पापा ने कहा. "काश आपने तेल डाला होता," माँ ने उत्तर दिया. "वो शोर मुझे काफी परेशान करता है."

पर अर्नेस्ट को पहिये के चरमराने की आवाज़ पसंद थी. उसे ऐसा लगता था जैसे कि पहिया गा रहा हो, "सेल्मा जा रहे हैं! सेल्मा जा रहे हैं! सेल्मा जा रहे हैं!" अर्नेस्ट ने काफी याद करने की कोशिश की जब वो पहली बार शहर गया था, लेकिन वो उसे याद नहीं आया. "तब मैं बहुत छोटा रहा होऊंगा," उसने फैसला किया, और तब उसने के शहर पूरे रास्ते भर अपने माँ के हाथ को पकड़कर रखा होगा.

उसे याद आया जब वो दादी द्वारा बनाई गई रजाई पर पर गाड़ी में अपना सर रखता था. उस समय वो गाड़ी के बाहर देखने के लिए बहुत छोटा था. लेकिन अब, वो अपने नंगे पैरों से सड़क को छूते हुए पीछे बैठकर सवारी करते हुए, सबकुछ देख सकता था - देवदार के घने जंगल, कपास के खेत, मज़दूरों के घरों की कतार, खाड़ी, चर्च, चरागाहों में चरने वाले मवेशी आदि. अगले वर्ष, 1932 में, वो दस साल का होगा और तब वो वैगन चला सकेगा. उसने अपने बिस्तर के बगल की दीवार पर तारीख लिखी थी, और पापा वो बात याद दिलाई थी कि तब वो उसे खच्चर की लगाम संभालने देंगे.

वो अब इतना बड़ा हो चुका था कि वो अकेले शहर में घूम सकता था, उसे हर समय अपने माँ या पापा के साथ रहने की ज़रुरत नहीं थी.

कभी-कभी उसे लंबी बेंच पर चुपचाप बैठना पसंद था जहाँ लोग, येलो-फ्रंट स्टोर के बाहर इकट्ठा होते थे और आपस में बातें करते थे. लेकिन आज वो शहर को अकेले ही खोजना चाहता था.

"कचेहरी की घड़ी देखना और बारह बजे तक येलो-फ्रंट में पक्का वापस आ जाना," पापा ने उससे कहा.

अर्नेस्ट समय पढ़ना जानता था. सामने वाले कमरे में चिमनी के ऊपर शेल्फ पर बड़ी घड़ी में चाभी भरने का काम उसका था. कभी-कभी जब वो चूल्हे के ऊपर कील पर टंगी पीतल की चाबी से घड़ी में चाभी भर रहा होता, तो पापा उससे कहते थे :

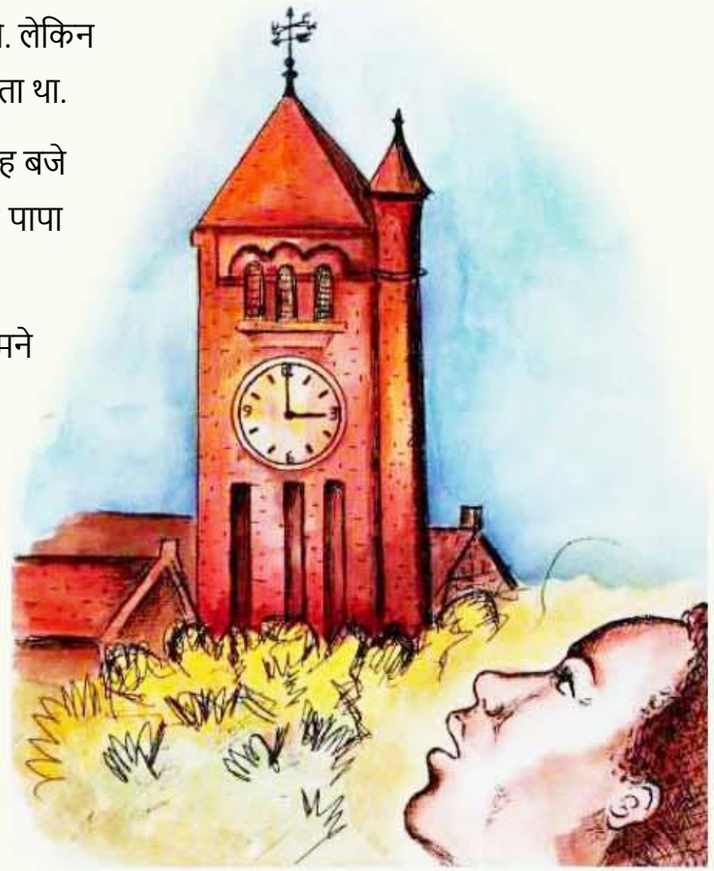

"घड़ी को कभी बंद मत होने देना. समय बहुत महत्वपूर्ण है. कभी भी देर मत करना." इसलिए अर्नेस्ट ने कभी देर नहीं की, अपने पूरे जीवन में कभी भी नहीं.

वो अच्छी तरह से पढ़ सकता था. उसे किताबें पसंद थीं. उसे उन जगहों के बारे में पढ़ना पसंद था जहाँ वो कभी गया नहीं था. उसे इतिहास को आकार देने वाले महत्वपूर्ण लोगों के बारे में भी पढ़ना पसंद था. हर रात वो अपनी बाइबिल पढ़ता था. उसने खुद से वादा किया था कि बड़ा होकर वो उत्पत्ति से लेकर रहस्योद्घाटन तक सभी विषयों के बारे में पढ़ेगा.

वो इंडियंस (स्थानीय जनजातियों) के बारे में किताबें पढ़ना चाहता था. अपने पिता के हल के पीछे-पीछे चलते समय वो इंडियंस के तीरों के सिरों को अपनी जेबों में भरता रहता था. वो उन लोगों के बारे में सोचता था जिन्होंने उन तीरों को आकार दिया होगा और जिन लोगों ने, प्राचीन काल में मिट्टी के बर्तनों को बनाया होगा.

"जब मैं बड़ा हो जाऊंगा," अर्नेस्ट कहा करता था, "तब मैं अपने घर में किताबों से भरा एक कमरा बनाऊंगा, जिसमें फर्श से छत तक किताबों की कतारे होंगी."

किसी जादू की तरह, किताबों के प्रति प्रेम ने, अर्नेस्ट को सेल्मा में उस गर्मी के दिन, अनजाने ही, कार्नेगी लाइब्रेरी में जाने के लिए आकर्षित किया. एक पुस्तकालय! किताबों से भरा सिर्फ एक कमरा ही नहीं बल्कि किताबों से भरी एक पूरी इमारत! उससे पहले अर्नेस्ट कभी किसी पुस्तकालय में नहीं गया था. किसी ने उसे यह भी नहीं बताया था कि सेल्मा में एक पुस्तकालय था. लेकिन अब वो पुस्तकालय के सामने खड़ा था. पुस्तकालय के पत्थर के दरवाज़े पर "कार्नेगी लाइब्रेरी" खुदा था. उसे कार्नेगी का क्या अर्थ है, यह तो नहीं पता था लेकिन वो लाइब्रेरी शब्द ज़रूर जानता था.

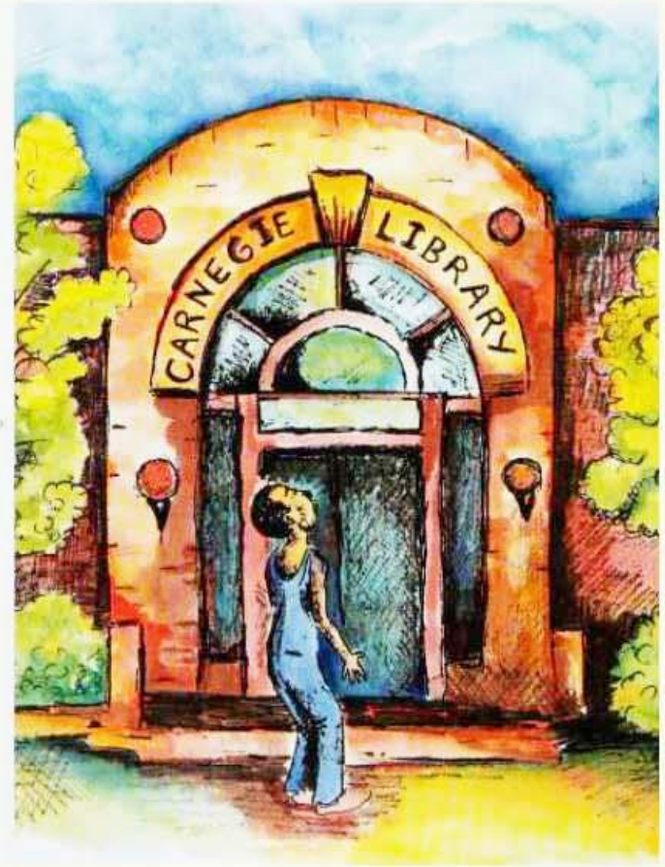

अर्नेस्ट सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा और फिर उसने भारी दरवाजे को धक्का देकर खोला. उसने जिस कमरे में प्रवेश किया वैसा हॉल उसने पहले कभी नहीं देखा था. एक पल के लिए वो स्तब्ध रह गया, और आश्चर्य से इधर-उधर देखने लगा.

तभी एक लम्बे काउंटर के पीछे से एक महिला ने कठोर स्वर में पूछा: "तुम क्या चाहते हो, लड़के?" उसने महिला ने चश्मे के ऊपर से उसे देखा.

"मैं उनमें से कुछ किताबें पढ़ना चाहता हूं, मैडम," अर्नेस्ट ने उत्तर दिया.

महिला ने और घूर से देखा. उसकी आवाज़ में अवमानना की एक तीखी धार थी, क्योंकि उसने कहा, "इस पुस्तकालय की किताबें सिर्फ गोरे लोगों के लिए हैं. हम काले लोगों को उन्हें पढ़ने नहीं देते हैं. कृपया तुम यहाँ से चले जाओ!"

अर्नेस्ट तुरंत मुड़ा और दरवाजे से बाहर निकला. वो नहीं चाहता था कि वो महिला उसे रोते हुए देखे.

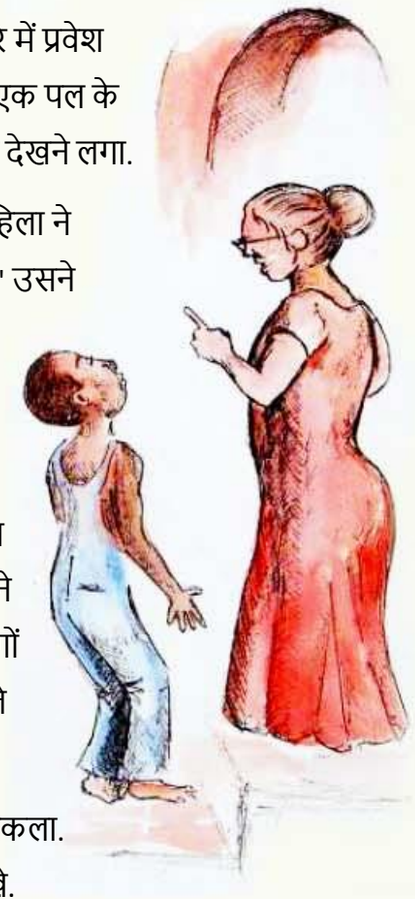

उसका दिन बर्बाद हो गया था. वो धीरे-धीरे आगे बढ़ा. उसने कुछ भी देखने के लिए अपना सिर ऊपर नहीं उठाया. वो वापस येलो-फ्रंट स्टोर की ओर चल दिया. वो दोपहर से बहुत पहले ही बेंच के एक कोने में आकर बैठ गया. उसने काफी कोशिश की, लेकिन वो वहां बैठे लोगों की बातचीत पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाया. उसके पापा ने जो हॉट-डॉग खरीदा वो भी उसे बेस्वाद लगा. उसके चाचा ने उसे एक कैंडी दी थी जो अभी भी उसने नहीं खाई थी.

बाद में उसके चचेरे भाई ने उसके साथ अपना कस्टर्ड साझा लेकिन वो भी उसे कुछ अच्छा नहीं लगा. उसने सोचा कि क्या उन चचेरे भाइयों ने कभी पुस्तकालय जाने की कोशिश की थी, लेकिन उसने यह बात उनसे नहीं पूछी.

अर्नेस्ट घर जाना चाहता था. वो खुश हुआ जब चर्च की घड़ी में चार बजे. पापा को बेंच से उठकर अपने दोस्तों को विदाई कहते हुए देखकर उसे खुशी हुई.

"घर जाने का समय हो गया है," पापा ने कहा. "मुझे और अर्नेस्ट को अभी कुछ काम करने हैं, और हमें कल चर्च जाने के लिए तैयार भी होना है. कल संगीतज्ञों की प्रशंसा का दिन है. आप सभी ज़रूर आएं. वहां खाने के लिए बहुत कुछ होगा. पर्ली-मे नारियल का केक लाएगी - अगर अर्नेस्ट ने चर्च पहुंचने से पहले उसे ख़त्म नहीं किया!"

वे लोग हँसे. अर्नेस्ट ने अपने पिताजी के कोमल चिढ़ाने पर मुस्कुराने की कोशिश की. उसने माता-पिता की खरीदारी को वैगन में भरने में मदद की, कुंड से खच्चर के लिए पानी लाया, और फिर वैगन के पीछे चढ़ गया.

वैगन का पहिया अभी भी चरमरा रहा था, लेकिन अब उसने अर्नेस्ट के लिए कोई खुश गीत नहीं गाया. अब उसे चरमराने की आवाज़ ऐसी लग रही थी, "कालों के लिए कोई किताब नहीं! कालों के लिए कोई किताब नहीं! कालों के लिए कोई किताब नहीं!"

वे घर पहुँचने वाले ही थे जब उसके पापा उसकी ओर मुड़े और उन्होंने पूछा, "क्या बात है बेटा?"

अर्नेस्ट ने पूरी बदसूरत कहानी उन्हें एक सांस में सुनाई. "क्यों, पापा? क्यों?" वो चिल्लाया. "मैं उस पुस्तकालय में जाकर किताबें क्यों नहीं पढ़ सकता? यह बात उचित नहीं है!"

उसके पापा ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया. अर्नेस्ट ने सोचा कि शायद उन्होंने उसका प्रश्न ही नहीं सुना. फिर, एक ऐसे स्वर में जिसे उसने पहले कभी नहीं सुना था पापा ने धीरे से कहा, "हाँ, बेटा, यह बिल्कुल उचित नहीं है. यह सही नहीं है. लेकिन चीजें वैसी ही हैं, जैसी वो हैं. हो सकता है कि किसी दिन हालात बदल जाएं. हो सकता है. अगर ऐसा होगा तो फिर वो एक चमत्कार होगा."

उसकी माँ ने कुछ भी नहीं कहा, लेकिन अर्नेस्ट को ऐसा लगा जैसे वो रो रही हों.

उसके बाद उन तीनों ने फिर कभी फिर से पुस्तकालय का उल्लेख नहीं किया.

अर्नेस्ट ने उन कठोर तिरिस्कार के शब्दों को भूलने की कोशिश की, जिससे उन्हें चोट लगी थी. इसाबेला बैपटिस्ट चर्च में गाना बजानेवालों के प्रशंसा दिवस पर जाने से उसे मदद मिली. जब उसने लोगों को अपनी माँ के नारियल केक की प्रशंसा करते सुना तो उसे गर्व हुआ, और वो तब मुस्कुराया जब पापा के एक मित्र ने उसे पूरा केक न खाने के लिए धन्यवाद दिया. अर्नेस्ट पूरे जीवन भर अपने माता-पिता के साथ चर्च गया था. वो अक्सर अपने चाचा द्वारा प्रचारित उपदेश को नहीं सुनता था, लेकिन वो प्रार्थना सेवा के दौरान चुपचाप बैठा रहता था. कुछ रविवारों को प्रार्थना के समय वो दीवारों में तख्तों को गिनता, और कुछ रविवारों को वो बल्लियों को गिनता था. गर्मियों के रविवार वाले दिन वो खुली खिड़कियों से बाहर कपास के खेतों की देखता था जिनसे चर्च लगभग घिरा हुआ था.

कुछ कीड़े और ततैया अक्सर खुली खिड़कियों में से अंदर उड़ते थे और उपासकों के सिर के चारों ओर मंडराते थे. अर्नेस्ट हंसना चाहता था जब महिलाएं अपनी पॉकेटबुक और पंखे से उड़ने वाले कीड़ों को मारने की कोशिश करती थीं, लेकिन तब पापा अर्नेस्ट को देखकर गुस्सा करते थे.

एक रविवार को उपदेशक को अपने धर्मोपदेश के ठीक बीच में रुकना पड़ा जब ततैयों का एक झुंड मंच पर मंडराने लगा. फिर बोर्ड के कुछ सदस्यों ने बचाव किया और घुसपैठियों को भगाया. अर्नेस्ट की एक मौसी ने कहा कि शैतान ने ही उन ततैयों को भेजा होगा. अर्नेस्ट इस बारे में निश्चित नहीं था, और वो पापा से वो सवाल पूछना भूल गया.

कभी-कभी उपदेशक चमत्कारों के बारे में बात करता था. अर्नेस्ट ने लाल समुद्र के दो हिस्सों में अलग होने की, और सिंहों की मांद में जेरिको की दीवार देहने की कल्पना दी. उसे यीशु के चमत्कारों के बारे में भी सुनना अच्छा लगता था. उसकी सबसे मनपसंद कहानी थी जिसमें यीशु ने एक छोटे लड़के के दोपहर के भोजन से एक बड़ी भीड़ को भोजन खिलाया था.

अर्नेस्ट ने कभी भी चर्च में अपनी रुचि नहीं खोई. जब वो किशोरावस्था में पहुँचा, तो उसने भजन मण्डली में गाया और संडे स्कूल की कक्षा को पढ़ाया.

उसके एक रिश्तेदार ने कहा, "अर्नेस्ट ने जो कुछ भी किया, वो हमेशा सबसे सामने रहा. वो कभी भी गाय की पूंछ नहीं बना."

नेतृत्व की वो क्षमता उसके जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई दी. जब वो सेल्मा की नॉक्स अकादमी में पढ़ने गया तो वो वहां एक शीर्ष विद्वान और 1943 के स्नातक वर्ग का अध्यक्ष था.

नॉक्स अकादमी में एक खराब पुस्तकालय था, लेकिन वहां कुछ ऐसी किताबें भी थीं जो अर्नेस्ट ने पहले नहीं पढ़ी थीं. वो अभी भी सेल्मा की कार्नेगी लाइब्रेरी के अंदर नहीं जा सकता था. वो अभी भी सोचता था कि आखिर ऐसा क्यों? स्नातक की पढ़ाई के बाद, अर्नेस्ट ने एक प्रोजेक्शनिस्ट के रूप में काम किया और नॉर्थ ब्रॉड स्ट्रीट पर स्थित एक रंगीन फिल्म हाउस रॉक्सी थिएटर का प्रबंधन किया. फिर 1943 की गर्मियों के अंत में उसने अमरीकी नौसेना में प्रवेश लिया.

जैसा कि उनकी उम्र के हजारों युवाओं के लिए सच था, द्वितीय महायुद्ध की सैन्य सेवा ने, अर्नेस्ट के जीवन को बदल दिया. उसकी दुनिया अब टायलर और सेल्मा तक ही सीमित नहीं थी. वे उन जगहों पर गया जिनके बारे में उसने केवल पढ़ा था, और 1946 में अपने सम्मानजनक छुट्टी के बाद, उसने सैनिक बिल द्वारा प्रदान किए गए शैक्षिक अवसरों का लाभ उठाया.

सबसे पहले, उसने शिकागो में अमेरिकी टेलीविजन संस्थान से स्नातक किया. फिर वो न्यूयॉर्क चला गया, जहां उसने फुल-टाइम काम करते हुए, सिटी कॉलेज में रात की कक्षाओं में पढ़ाई की, बी.एस. गणित में डिग्री हासिल की. उसने बैपटिस्ट चर्च में एक डेकन के रूप में सेवा दी, जिसे उसके एक चाचा ने हार्लेम में स्थापित किया था. और साथ में उसने अन्य पुस्तकालयों का भी दौरा किया.

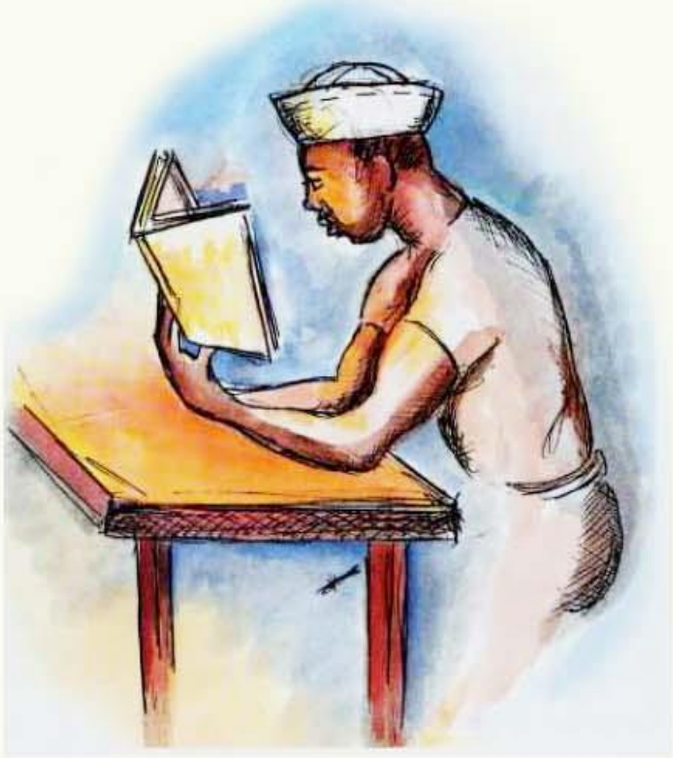

अर्नेस्ट ने पढ़ाने की कोशिश भी की, लेकिन वो तब निराश हुआ जब उसकी कक्षाओं में किशोरों ने सीखने में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई. उसके छात्रों ने उनके लिए खुले अच्छे पुस्तकालयों का लाभ नहीं उठाया, और जब अर्नेस्ट ने उन्हें सेल्मा की कार्नेगी लाइब्रेरी में अपनी अस्वीकृति के बारे में बताया तो वे अविश्वास से उसकी ओर देखने लगे.

फिर कुछ दोस्तों ने सुझाव दिया कि वो छोटे बच्चों का मनोरंजन करने और उन्हें निर्देश देने की अपनी स्वाभाविक क्षमता, छोटों को कहानियाँ पढ़ने और सुनाने और बचपन की शिक्षा में एक नया करियर शुरू करे. इसलिए अर्नेस्ट ने उस क्षेत्र में अध्ययन के लिए सिटी कॉलेज में फिर से दाखिला लिया.

अर्नेस्ट ने बच्चों, सभी जातियों और नस्लों के बच्चों से प्यार किया और उन्होंने उसका प्यार सहर्ष लौटाया. सहकर्मियों ने देखा कि पूर्व-विद्यालय के छात्रों के समूह हर जगह उसका पीछा करते थे, और उससे चिपके रहते थे और उसकी बातें सुनते और हंसते थे. अर्नेस्ट अपने तीन, चार और पांच साल के युवा छात्रों को पुस्तकालयों में ले जाता था. वहां बच्चे किताबें उठा सकते थे, उनके पन्ने पलट सकते थे और उनके सुन्दर चित्रों को देख सकते थे.

"बच्चों को किताबों की ज़रूरत होती है," अर्नेस्ट कहा करते थे.

साहित्य के प्रति उनकी रूचि और यात्रा के प्रति उनका उत्साह दोनों एक-साथ कायम रहे. उन्होंने न केवल अमरीका के सभी पचास राज्यों का दौरा किया पर साथ में उन्होंने उन्नीस देशों की भी यात्रा की. वो जहाँ भी वे गए, उन्होंने दोस्त बनाए. अर्नेस्ट हमेशा परिवार के सदस्यों और दोस्तों को विदेशों से कार्ड भेजते थे और अपने विद्यार्थियों के लिए तस्वीरें और किताबें, यहां तक कि विदेशी भाषाओं में भी, इकट्ठा करते थे.

हालांकि उन्होंने दुनिया भर में यात्रा की, अर्नेस्ट यह कभी नहीं भूले कि वो कहां से आए थे. वो टायलर समुदाय और सेल्मा को कभी नहीं भूले. वो बार-बार घर जाते थे. वो अपने माता-पिता को न्यूयॉर्क ले आए थे ताकि वो (उनकी एकमात्र संतान) उनकी देखभाल कर सके. वो माता-पिता की मृत्यु के बाद उनके शरीर को इसाबेला बैपटिस्ट चर्च के कब्रिस्तान में दफनाने के लिए टायलर वापस आए.

एक यात्रा के दौरान उन्होंने अपने न्यूयॉर्क के एक दोस्त, डॉ नॉर्मल पॉल के साथ सेल्मा में एक सुबह बिताई. उन्होंने शहर की विभिन्न वास्तुकलाओं को निहारा और शहर की सड़कों पर टहले. तभी उनका मार्ग उन्हें सार्वजनिक पुस्तकालय तक ले गया.

डॉ. पॉल ने टिप्पणी की, "मुझे लगता है कि जब आप बड़े हो रहे होंगे तब आपने यहां बहुत समय बिताया होगा."

"नहीं," अर्नेस्ट ने उत्तर दिया. "नहीं. आप भूल रहे हैं कि मैं एक रंगभेदी और अलगाववादी दक्षिण में पला-बढ़ा था. मुझे उस पुस्तकालय में जाने की अनुमति नहीं थी."

डॉ. पॉल चुप रहे. फिर उन्होंने चुटकी ली. "ठीक है, अब उसके अंदर चलते हैं," उन्होंने कहा.

और उन्होंने वही किया.

पुस्तकालय के कर्मचारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, उन्हें इमारत के चारों ओर दिखाया और नई सुविधायों में बच्चों के लिए नया विंग को जोड़ने की योजना के बारे में बताया. अर्नेस्ट ने उनकी बातें ध्यान से सुनीं.

चिल्ड्रेन्स विंग का निर्माण शुरू होने से पहले कई महीने योजना और धन जुटाने में लग गए. कभी-कभी परियोजना को संभालने वाली समिति निराश हो जाती थी और लगभग हार मान लेती थी. लेकिन जब उनकी आत्मा डूबती थी और उदासी छा जाती थी तब हमेशा कोई एक छोटा चमत्कार होता था.

एक दिन कई चीजें गलत हो गई थीं, और लोग बहुत अधिक उदास थे. फिर यह खबर आई कि एक संभावित दाता, एक व्यक्ति जिसे वित्त समिति ने एक बड़ा उपहार देने के लिए चुना था, ने परियोजना का समर्थन नहीं करने का फैसला किया था.

समिति के एक सदस्य ने कराहते हुए कहा, "हो सकता है कि हमें बच्चों की विंग का निर्माण ही नहीं करना चाहिए था. ये संकेत है कि हैं कि हमें उस कार्य को छोड़ देना चाहिए."

तभी एक मानसिक रूप से विकलांग बच्चा, जो पुस्तकालय में आने का आनंद लेता था, अपनी माँ के साथ आया. वो चेक-आउट डेस्क पर गया और वहां पर उसने अपना गुल्लक खाली कर दिया. जैसे ही काउंटर पर सिक्के बजे उसने सरलता से कहा. "मैं अपना पैसा भगवान का पुस्तकालय बनाने के लिए लाया हूँ."

उसके बाद उस योजना में लोगों का विश्वास फिर कभी नहीं डगमगाया.

हालाँकि, जैसे-जैसे इमारत का ढांचा पूरा होने वाला था, लाइब्रेरियन किताबों के साथ नई अलमारियों को स्टॉक करने के लिए धन खोजने के बारे में चिंतित थे.

"अगर हम बच्चों के लिए किताबें नहीं खरीद सकते तो फिर इस अद्भुत नई इमारत का क्या फायदा? उसके लिए पैसा कहाँ से आएगा?" उन्होंने आश्चर्यचकित होकर पूछा.

अब एक अन्य चमत्कार का समय था.

फिर पत्र आया, न्यूयॉर्क पोस्टमार्क वाला पत्र. पत्र में लिखा था, "मैं, अर्नेस्ट एल. डॉसन की संपत्ति के निष्पादक के रूप मैं यह घोषणा करने के लिए लिख रहा हूं कि मिस्टर डॉसन ने सेल्मा पब्लिक लाइब्रेरी को, अपने लाभार्थियों के रूप में चुना है. अर्नेस्ट के परिवार के सम्मान में 10,000 डॉलर का दान देने के लिए आपके पुस्तकालय में आकर मुझे बहुत खुशी होगी."

कभी-कभी सभी जातियों और नस्लों के बच्चे, सेल्मा लाइब्रेरी के रीडिंग रूम में, एक कोमल मुस्कान और हँसती आँखों के आदमी की तस्वीर को दीवार पर देखने के लिए रुकते हैं. अधिकांश बच्चे चित्र के नीचे शिलालेख पर अर्नेस टी. डॉसन को पढ़ने के लिए बहुत छोटे होते हैं, और यह समझने के लिए भी बहुत छोटे होते हैं कि डॉसन, क्षमा और प्रेम के चमत्कार से ओत-प्रोत थे.

समाप्त